२२ - इतने सारे चुनाव

1

सही कलीसिया आपको कैसे मिलती है?

2

कभी आपने सोचा है कि इतनी अधिक भिन्न भिन्न कलीसियाएं क्यों है? सामान्य आदमी भ्रमित है। अधिकतर कलीसियाएं सिखाती हैं कि केवल उनके पास ही सत्य है। कभी आपने विचार किया है कि कौन सी कलीसिया वास्तव में परमेश्वर के विषय में सत्य सिखाती और उसपर विश्वास करती हैं?

3

मित्र, हमारे प्रश्नो के उत्तर बाइबिल के पास हैं। भ्रम के संसार में सत्य क्या है और झूठ क्या है इनके बीच भेद करने हेतु परमेश्वर के वचन पर सदैव भरोसा किया जा सकता है।

4

इसलिए इस समय हमारे अध्ययन का विषय है, "इतनी अधिक भिन्न भिन्न कलीसियाएँ क्यों?"

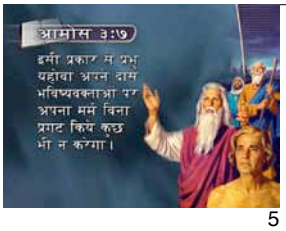

5

(मूलपाठः आमोस ३:७)
बाइबिल कहती है,"इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यवक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रगट किये कुछ भी न करेगा।" आमोस ३:७

२२ - इतने सारे चुनाव

6 (दृश्य)

आइए हम परमेश्वर के वचन में जाए। याद रखे मैं क्या सोचता हूँ इसका कोई महत्व नहीं। महत्व इस बात का है कि क्या यह बाइबिल में है। यदि है मैं इस पर विश्वास करता हूँ। यदि यह बाइबिल में नहीं है यह मेरे लिए नहीं है।

7 अध्ययन आरम्भ करने के लिए आइए, बाईबिल की अन्तिम पुस्तक - प्रकाशितवाक्य का ६ठा अध्याय देखें जहां चार घुड़सवारों के विषय में बताया गया है।

8 वे चार घुड़सवार मसीही कलीसिया के इतिहास में अलग कालों का बोध करवाते हैं। समय के उन कालों में हम आज की अलग -अलग कलीसियाओं का विकास देखते हैं।

9 (मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ६:१)

"फिर मैंने देखा, कि मेम्ने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला;

२२ - इतने सारे चुनाव

10

और उन चारों प्राणियों में से एक का गर्जन का सा शब्द सुना कि आ और देख।"

प्रकाशितवाक्य ६:१

अब मसीहियत का इतिहास यहाँ अध्याय ६ में प्रकट होता है।

11

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ६:२)

"और मैंने दृष्टि की और देखो, एक श्वेत घोड़ा है और उसका सवार धनुष लिये हुए है और उसे एक मुकुट दिया गया,

12

और वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे।"

प्रकाशितवाक्य ६:२

13

इस प्रकार पहली कलीसिया विजयी विश्वास की कलीसिया है। यह एक श्वेत घोड़ा है।

श्वेत शुद्ध विश्वास का प्रतीक है।

14

यीशु के स्वर्गारोहण के ठीक बाद पहली शताब्दी में कलीसिया का जीवन बहुत रोमांचकारी रहा होगा।

२२ - इतने सारे चुनाव

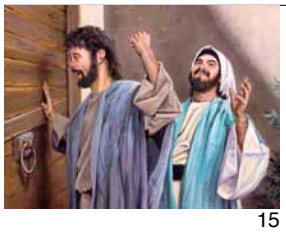

15

चेले साहस और विश्वास से अत्यधिक भरे हुए थे क्योंकि वे यीशु के साथ चले थे और उन्होंने यीशु से बातें की थीं। उन्होंने उन्हें जी उठने के बाद देखा था। उन्होंने उन्हें स्वर्ग में जाते हुए देखा था। वे जानते थे कि वे वापस आयेगें। वे अपने पूरे हृदय से उनकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करते थे।

16

उन्होंने सुसमाचार को बड़े साहस और बड़े उत्साह के साथ पूरे संसार को सुनाया।

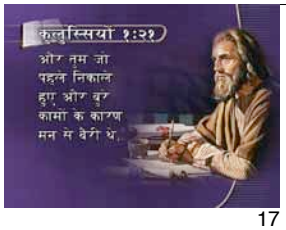

17

(मूलपाठः कुलुस्सियों १:२१-२३)

यथार्थ में उद्धार का सुसमाचार उस समय ज्ञात संसार के प्रत्येक भाग में प्रचार किया गया। पौलुस कहता हैः -"और तुम जो पहले निकाले हुए और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे,

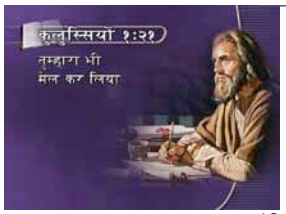

18

उसने तुम्हारा भी मेल कर लिया

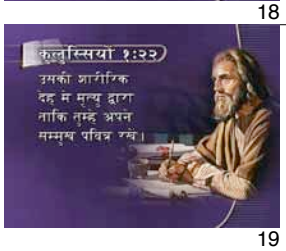

19

उसकी शारीरिक देह मे मृत्यु द्वारा ताकि तुम्हे अपने सम्मुख पवित्र रखे।

२२ - इतने सारे चुनाव

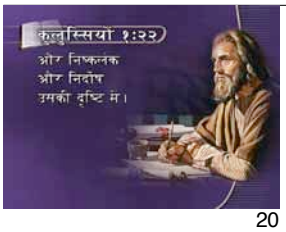

20

और निष्कलंक और निर्दोष उसकी दृष्टि में।

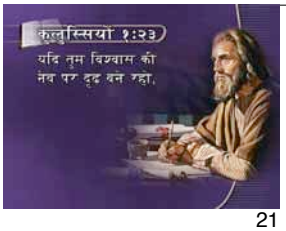

21

यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो,

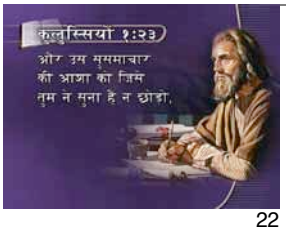

22

और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोडो,

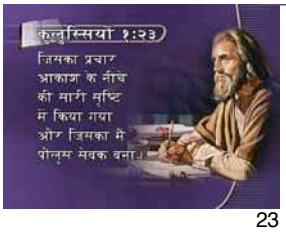

23

जिसका प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया और जिसका मैं पौलुस सेवक बना।" कुलुस्सियों १:२१-२३

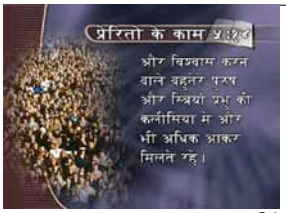

24

(मूलपाठः प्रेरितो के काम ५:१४)

"और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियाँ प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।"

प्रेरितो के काम ५ : १४

प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें बताती हैं कि प्रतिदिन हजारों लोग बपतिस्मा लेते थे।

२२ - इतने सारे चुनाव

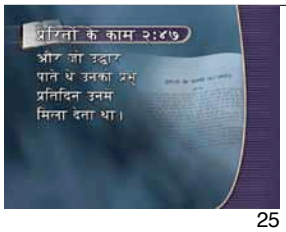

25

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २:४७)

"और जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।"

प्रेरितों के काम २:४७

कलीसिया मसीह की देह थी।

26

लोग मसीह में बपतिस्मा पाते थे। वे उसकी देह में जो कि उसकी कलीसिया थी बपतिस्मा पाते थे। आरम्भिक चेलों के लिए यीशु के प्रति विश्वासी रहना बहुत महत्वपूर्ण था। जब चेलों को यीशु के नाम में प्रचार न करने की चेतावनी दी गयी, तो बाइबिल बताती है:

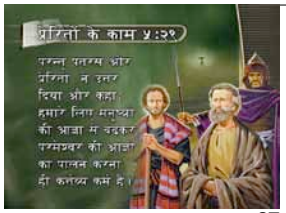

27

(मूलपाठः प्रेरितों के काम ५:२९)

"परन्तु पतरस और प्रेरितों ने उत्तर दिया और कहा: हमारे लिए मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।"

प्रेरितों के काम ५:२९

आप देखते हैं कि परमेश्वर का कहा मानना मनुष्यों की रीतियों को मानने से अधिक महत्वपूर्ण था।

२२ - इतने सारे चुनाव

28

इस प्रकार उनका विश्वास निर्मल था क्योंकि वे यीशु के साथ रहे थे।

उनका विश्वास यीशु का विश्वास था।

उनकी शिक्षाएं यीशु की शिक्षाएं थीं।

29

आज हमारे अन्दर भी वैसा ही विश्वास होना चाहिए। एक साधारण शुद्ध विश्वास जो यीशु के आगमन की प्रतीक्षा करता है। एक ऐसा विश्वास जो मुक्ति के सुसमाचार को सबको सुनाने के लिए व्याकुल रहता है, अपने मित्रों को, अपने पड़ोसियों को और समस्त संसार को। क्योंकि यीशु ने यह आज्ञा दी है। यही शुद्ध विश्वास है जो प्रथम शताब्दि की कलीसिया के विश्वासियों का था।

30

प्रथम कलीसिया के विजयी विश्वास को श्वेत घोड़े से दिखाया गया है।

यह समय काल १०० ईसवी में समाप्त हो गया।

31

यीशु ने जब दूसरी मुहर खोली तब यूहन्ना ने क्या देखा?

२२ - इतने सारे चुनाव

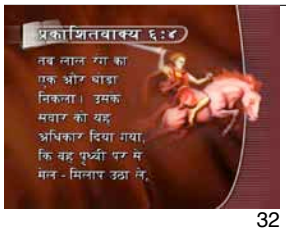

32

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ६:४)

"तब लाल रंग का एक और घोड़ा निकला। उसके सवार को यह अधिकार दिया गया, कि वह पृथ्वी पर से मेल -मिलाप उठा ले,

33

ताकि लोग एक दूसरे को घात करे और उसे एक बड़ी तलवार दी गयी।"

प्रकाशितवाक्य ६:४

इस प्रकार हम यहाँ एक रक्त रंजित विश्वास पाते हैं।

34

हम जानते हैं कि १०० ईसवी के बाद मसीहियों को उठा कर रोम ले जाया गया जहाँ उन्हें मार डाला गया।और उनमें से बहुतों को रोमी साम्राज्य के विशाल मादों में फेंक कर सिहों को खिला दिया गया।

२२ - इतने सारे चुनाव

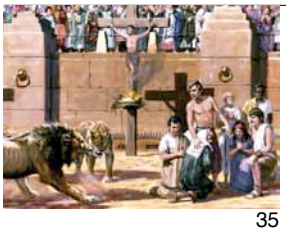
35

मसीही कलीसिया के लिए यह कितना भयानक समय था! किन्तु फिर भी कलीसिया बढ़ती गयी। उस समय के एक कलीसिया के इतिहासकार ने कहा कि ऐसा लगता था कि मसीहियों का खून बीज के समान था। जैसे लोग मरते और यीशु के लिए बलि होते थे तो ऐसा लगता था जैसे एक बीज रोपा गया हो क्योंकि दूसरे उनका स्थान लेने के लिए खड़े हो जाते थे। उद्धार का सुसमाचार पूरे रोमी साम्राज्य में और उस समय के संसार में फैल गया,

36

इस प्रकार लाल घोड़ा रक्त रंजित विश्वास को दिखाता है। दूसरी मुहर १०० से ३२३ ईसवी तक की मसीही कलीसिया है।

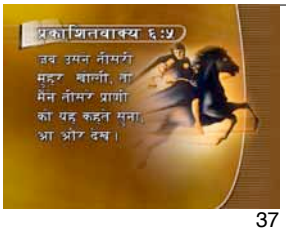

37

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ६:५)
अब यीशु ने तीसरी मुहर खोली -- मसीही कलीसिया के तीसरे काल का समय।
"जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना, 'आ और देख'

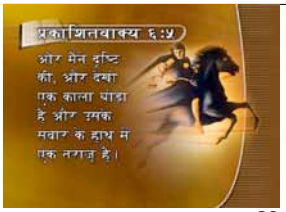

38

और मैंने दृष्टि की, और देखो एक काला घोड़ा है और उसके सवार के हाथ में एक तराजू है।"
प्रकाशितवाक्य ६:५

२२ - इतने सारे चुनाव

39

यह काला घोड़ा एक निर्बल, अशुद्ध, और समझौतों से भरा विश्वास दिखाता है।

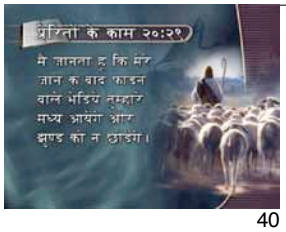

40

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २०:२९,३०)

"मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िये तुममें आयेंगे जो झुण्ड को न छोडेंगे।"

41

"और तुम्हारे ही बीच में से ऐसे ऐसे मनुष्य उठेगें जो चेलो को अपने पीछे खींच लेने टेढ़ी - मेढ़ी बातें कहेंगे।"

प्रेरितों के काम २०:२९,३०

मसीही कलीसिया में यह बहुत दुःख का समय है।

42

यह अशुद्ध विश्वास का काल है --जब सांसारिक मूर्तिपूजकों की रीतियाँ मसीही धर्म से मिल गई। दानिय्येल ने इसकी पूर्ण घोषणा की थी।

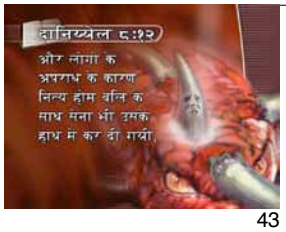

43

(मूलपाठः दानिय्येल ८:१२)

"और लोगों के अपराध के कारण नित्य होम बलि के साथ सेना भी उसके हाथ में कर दी गयी;

44

और उस सींग ने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया और वह काम करते करते सफल हो गया।"

दानिय्येल ८:१२

२२ - इतने सारे चुनाव

45

पहली मुख्य सच्चाई जो इस काल में मिट्टी में मिलाई गई वह थी केवल यीशु में विश्वास द्वारा उद्धार। मसीह द्वारा उद्धार का स्थान कलीसिया की रीति -रिवाज़ों ने ले लिया था।

46

आप याद करेंगे कि जैसा हमने पहले अध्ययन किया है, बाइबिल के अनुसार उद्धार एक मुफ्त उपहार है। यह एक उपहार है क्योंकि हम सबने पाप किया है और इसके हकदार नहीं हैं। हम मृत्यु के हकदार हैं, क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है।
किन्तु परमेश्वर का वरदान अनन्त जीवन है।

47

जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिये मरे। यही है सरल सुसमाचार।

48

उस मुफ्त वरदान को पाने के लिए हमें यीशु को अपने दिलों में बुलाने की आवश्यकता है।

49

तब वह हमारे सारे पापों को क्षमा कर देता है।

50

और दूसरे, वह हमें पाप न करने का सामर्थ देता है। वह हमें उसके पदचिन्हों पर चलने की शक्ति देगा।

२२ - इतने सारे चुनाव

51

किन्तु उद्धार की इस सरल सच्चाई का, इस सरल सुसमाचार का स्थान इस काल में कलीसिया के रीति -रिवाज़ों ने ले लिया।

52

परमेश्वर के सिंहासन के सामने बेहिचक जाकर उसका अनुग्रह और क्षमा प्राप्त करने की बजाय, और पाप स्वीकार करने के बजाय, मसीहियों को कहा गया कि पाप क्षमा के लिये उन्हें धन देना पड़ेगा।

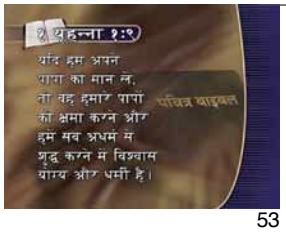

53

(मूलपाठः १ यूहन्ना १:९)
किन्तु बाइबिल कहती है, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।"
१ यूहन्ना १:९

54

मसीहियों को बताया जाता था कि उन्हें याजक के पास जाना होगा। उन्हें एक मनुष्य के पास जाना होगा। अब वे साहस के साथ परमेश्वर के सिंहासन के सामने नहीं जा सकते। उद्धार जटिल हो गया था। और लोगों ने इसको स्वीकार कर लिया क्योंकि उनके पास परमेश्वर का वचन नहीं था।

२२ - इतने सारे चुनाव

55

यर्थाथ में इस काल में परमेश्वर का वचन रखना कानून के विरुद्ध था। छपाई मशीनों का आविष्कार नहीं हुआ था इसलिए धर्मशास्त्र का छोटा -सा भाग भी प्राप्त करना कठिन था। जो कुछ कलीसिया ने बताया उसे बहुत लोगों ने स्वीकार कर लिया और मसीही विश्वास अत्यधिक भ्रष्ट हो गया।

56

बाइबिल की दूसरी सच्चाई जिसमें समझौता किया गया वह था लकड़ी या पत्थर से बनी वस्तुओं की आराधना करना। सृष्टिकर्ता परमेश्वर दस आज्ञाओं में कहता है:

57

(मूलपाठः निर्गमन २०:४,५)
"तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में,

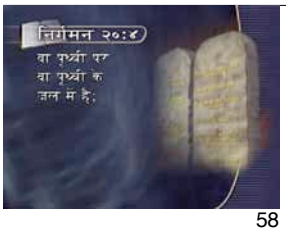

58

वा पृथ्वी पर वा पृथ्वी के जल में है;

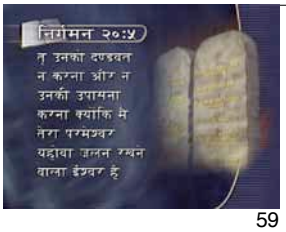

59

तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना।
क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूँ,

२२ - इतने सारे चुनाव

60

और जो मुझसे बैर रखते हैं उनके बेटों पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ।"
निर्गमन २०:४,५

61

यही समय था जब मूर्तियाँ कलीसिया में प्रवेश कर गयीं। दस आज्ञाओं में बहुत स्पष्ट लिखा है कि परमेश्वर को छोड़ किसी दूसरी वस्तु को दण्डवत करना गलत है।

62

बाइबिल की तीसरी सच्चाई जो समझौते में आ गयी वह चौथी आज्ञा और आराधना से सम्बंधित थी। ध्यान दें बाइबिल दानिय्येल के विषय क्या कहती है जब उसने इसे देखा:

63

(मूलपाठः दानिय्येल ७:१५)
"और मुझ दानिय्येल का मन विकल हो गया, और जो कुछ मैंने देखा था, उसके कारण मैं घबरा गया।"
दानिय्येल ७:१५

64

आप देख चुके हैं किस प्रकार कांस्टेटाइन ने जबरदस्ती पहले रविवार नियम को सातवें दिन के सब्त के स्थान पर सप्ताह के प्रथम दिन रविवार में परिवर्तित कर दिया।

२२ - इतने सारे चुनाव

65

(मूलपाठः यूहन्ना १४:१५)

किन्तु याद रखे, यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

यूहन्ना १४:१५

इस अशुद्ध विश्वास के काल में यीशु के लिये प्रेम ठण्डा पड़ गया, और लोग परमेश्वर को मानने के बजाय रीतियों को मानने लगे।

66

कलीसिया ने सब्त के समझौते को स्वीकार कर लिया और आराधना के दिन को बदलने का प्रयास किया। २१ मई, १९१५ को सन्त कैथरीन के कैथलिक चर्च सेन्टीनल नामक पत्रिका ने कहा,

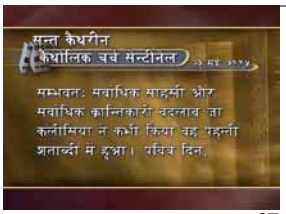

67

"सम्भवतः सर्वाधिक साहसी और सर्वाधिक क्रान्तिकारी बदलाव जो कलीसिया ने कभी किया वह पहली शताब्दी में हुआ। पवित्र दिन,

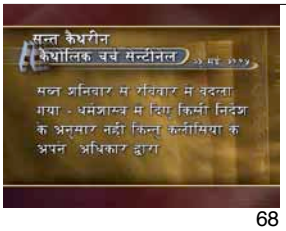

68

सब्त शनिवार से रविवार में बदला गया - धर्मशास्त्र में दिए किसी निर्देश के अनुसार नहीं किन्तु कलीसिया के अपने अधिकार द्वारा ...

२२ - इतने सारे चुनाव

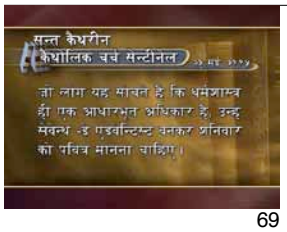

69

जो लोग यह सोचते हैं कि धर्मशास्त्र ही एक आधारभूत अधिकार है, उन्हे सेवेन्थ -डे एडवेन्टिस्ट बनकर शनिवार को पवित्र मानना चाहिए।"

70

रविवार, सप्ताह के पहले दिन, की आराधना बाइबिल में नहीं है। इस बात को संसार भर के विद्वान स्वीकार करते हैं।

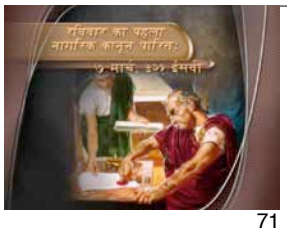

71

जैसा कि हमने देखा है कि यह बदलाव रोमी साम्राज्य के सम्राट कान्सटेनटाइन ने ३२० ईसवी में किया और कलीसिया ने इसे स्वीकार कर लिया।

72

जैसा कि हमने देखा है कि यह बदलाव रोमी साम्राज्य के सम्राट कान्सटेनटाइन ने ३२० ईसवी में किया और कलीसिया ने इसे स्वीकार कर लिया।

73

द हिस्ट्री आफ दि ईस्टर्न चर्च, पृ. १८४ पर लिखा है, "कान्सटेनटाइन के सिक्कों पर एक ओर मसीह के नाम का अक्षर और दूसरी ओर सूर्य देवता का चित्र था ...

74

जैसे वह चमकदार सूर्य की संरक्षण त्यागने का साहस नहीं कर सका।" क्या यह रुचिकर नहीं है?

२२ - इतने सारे चुनाव

75

परमेश्वर अपनी आज्ञाओं में इसे बहुत स्पष्ट शब्दों में कहता है:

76

(मूलपाठः निर्गमन २०:११)
"क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है सबको बनाया,

77

और सातवें दिन विश्राम किया इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उस को पवित्र ठहराया।"
निर्गमन २० : ११

78

परमेश्वर यह स्पष्ट करता है कि वह चाहता है कि उसके लोग सातवें दिन सब्त को पवित्र माने। आरम्भ में बाइबिल कहती है,

79

(मूलपाठः उत्पत्ति २:३)
"और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया,

80

क्योंकि उस में उस ने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।"
उत्पत्ति २:३

२२ - इतने सारे चुनाव

81

यदि सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर

82

ने एक दिन को आशीष दी,

83

यदि उसने एक दिन अलग रखा,

84

यदि उस ने दूसरे दिनों से बढ़कर एक दिन को पवित्र ठहराया तब मेरे मित्रों, मनुष्य के पास इसे बदलने के लिए कोई अधिकार, कोई शक्ति नहीं है। यह आराधना का एक विषय बन जाता है, आज्ञाकारिता का एक विषय कि या तो हम मनुष्य की रीतियों का पालन करेंगे या फिर वह करेंगे जो परमेश्वर ने कहा है।

85

यह निर्बल, अशुद्ध विश्वास का काल है, विश्वास के समझौते का काल जो ३२३ से ५३६ ईसवी तक है।

86

अब हम मसीही कलीसिया के चौथे युग की ओर बढ़ते हैं जो कि पीला घोड़ा है।

२२ - इतने सारे चुनाव

87

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ६:७,८)

"और जब उसने चौथी मुहर खोली तो मैंने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना कि आ और देख।

88

और मैंने दृष्टि की और देखो एक पीला सा घोड़ा है और उसके सवार का नाम मृत्यु है और अधोलोक उसके पीछे - पीछे है।

89

और उन्हें पृथ्वी की एक चौथाई पर यह अधिकार दिया गया कि तलवार,

90

और अकाल और मरी और पृथ्वी के वन पशुओं के द्वारा लोगों को मार डाले।"

प्रकाशितवाक्य ६:७,८

91

एक मृत विश्वास – चौथी मुहर।

यह कलीसिया और सरकार की संयुक्ति का समय था। अब तक पवित्र रोमी साम्राज्य पूरी तरह विकसित हो चुका था और यह केवल एक धार्मिक सरकार ही नहीं परन्तु एक राजनीतिक शक्ति भी बन चुकी थी। अब धार्मिक और राजनैतिक शक्तियों का गठबन्धन हो गया था।

२२ - इतने सारे चुनाव

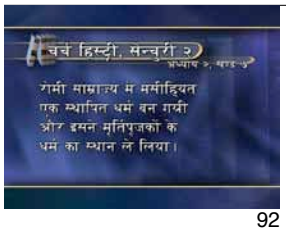

92

संक्षेप में इस कथन पर ध्यान दीजिए: "रोमी साम्राज्य में मसीहियत एक स्थापित धर्म बन गयी और इसने मूर्तिपूजकों के धर्म का स्थान ले लिया।

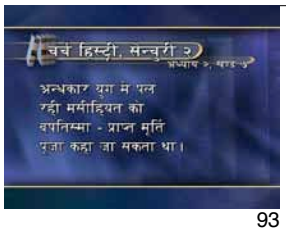

93

अन्धकार युग में पल रही मसीहियत को बपतिस्मा-प्राप्त मूर्ति पूजा कहा जा सकता था।"
चर्च हिस्ट्री, सेन्चुरी २, अध्याय २, खण्ड ७

94

याद रहे इस समय में परमेश्वर के वचन तक लोगों की पहुँच नहीं थी। यर्थाथ में यह कानून के विरुद्ध था और जैसा हम कह चुके हैं कि छपाई मशीन का आविष्कार अभी तक नहीं हुआ था।

95

लोग परम्परा की रीतियों का पालन करते थे। वे मूर्तिपूजा और उन संस्कारों को मानते थे जो कलीसिया में घुस आये थे। यह ऐतिहासिक सच्चाई है जो मैं आप को बता रहा हूँ।

२२ - इतने सारे चुनाव

96

(दृश्य)

एक मात्र कलीसिया इस समय रोमन कलीसिया ही थी। पुनः, यह किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना नहीं, किन्तु एक पद्धति की आलोचना है। संसार में अनेक कैथोलिक विश्वासी और पुरोहित और बहनें है जो यीशु से बहुत प्रेम करते हैं और सत्य की खोज कर रहे हैं। यह समझना महत्वपूर्ण है कि आज हम जहाँ हैं वहाँ क्यों हैं।

97

यह समझौते का भयानक समय और परमेश्वर के लोगो की सताहट का भयानक समय था।

98

यही कारण है कि इसे "अंधकार का युग" कहा जाता है। ५०० लाख मसीही उनके विश्वास के कारण मार डाले गए।

99

यहां समझौते के कदमों पर ध्यान दें:

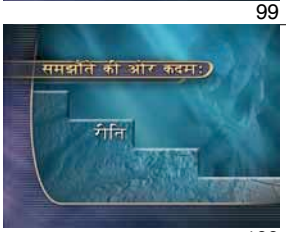

100

रीतियाँ,

२२ - इतने सारे चुनाव

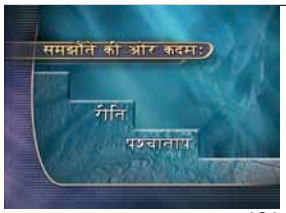

101

पश्चाताप,

102

और दान के बदले क्षमा प्राप्ति की रीतियों ने कलीसिया में प्रवेश किया। आप धन देकर अपने मृत सम्बन्धियों के पाप क्षमा करवा सकते थे जिससे उन्हें पाप मोचन स्थान में नहीं भुगतना पड़ता। या आप अपने लिए क्षमा खरीद सकते थे जिससे मृत्यु पश्चात आप पाप मोचन स्थान से बच सकें। यह अंधविश्वासी धार्मिकता का एक और उदाहरण है।

103

परमेश्वर के वचन में पाप मोचन स्थान जैसी कोई वस्तु नहीं है। मूर्तियों के साथ साथ पुरोहितों का शासन और धर्मनीति भी कलीसिया में घुस गयीं।
क्या परमेश्वर का वचन सदैव पैरों से रौंदा जाता रहेगा? बिल्कुल नहीं, क्योंकि सत्य का प्रकाश अंधकार को चीर देगा। और उन सच्चाईयों को जो अंधकार युग में खो गयी थी पुनः खोजने के लिए कदम उठायें जाएंगे।

104

धर्म सुधार के दौरान यीशु का निर्मल विश्वास पुनः प्रकट होना आरम्भ हो गया।

२२ - इतने सारे चुनाव

105

१४०० की अन्धकार युग से बाहर कदम रखने वालों में वॉलडेन्सियेन्स प्रथम थे।

106

उन्होंने परमेश्वर के वचन बाइबिल में पुनः सच्चाई की खोज की। बाइबिल बहुत महत्वपूर्ण है।
यदि हमारे पास परमेश्वर का वचन –उसका हमारे लिए प्रेमपत्र – नहीं होता तो हम जीवन में दिशाहीन हो जाते।

107

उत्तरी इटली में हम बाईबिल में विश्वास करने वाले वॉलडेन्सियेन्स का इतिहास पाते हैं। ये लोग पवित्र शास्त्र के छोटे हिस्सों को हाथ से लिखते थे और उन्हें अपने बच्चों को देते थे। उनके वस्त्रों में सिले हुए इन बाईबिल पदों के साथ बच्चे यूरोप के महान नगरों में घूमते थे। इन बाइबिल पदों को वे बाजारों और युनिवर्सिटियों में बनाये नये मित्रों के साथ बांटते थे।

108

पकड़े जाने पर परिणाम बहुत भयानक होता था – उन्हें खम्बें से बांध कर जला दिया जाता था। यद्यपि बहुत से लोगों ने अपना जीवन खो दिया, फिर भी वॉलडेन्सियेन्स इसे सुअवसर समझते थे जिससे परमेश्वर का कार्य होता रहे।

२२ - इतने सारे चुनाव

109

वेल्डेन्सीएन्स के बाद प्राग में जॉन हस्स नामक एक धर्म सुधारक हुआ जो बाइबिल का विद्यार्थी था। हस्स ने अपने मित्र जेरोम के साथ मिलकर यह पाया कि कलीसिया या किसी व्यक्ति की आज्ञा मानने से अधिक महत्वपूर्ण परमेश्वर की आज्ञा का पालन था।

110

चूंकि उन्होंने कलीसिया की रीतियों का पालन करने की बजाय आज्ञा पालन पर दृढ़ रहने और परमेश्वर के कहे पर विश्वास करने का निश्चय किया इसलिये उन्हें जलाकर मार डाला गया। उनकी राख भूमध्यसागर में बहने वाली नदी में डाल दी गई। इसी प्रकार धर्म सुधार आन्दोलन अपने स्रोत से निकल कर पूरे संसार में फैल गया।

111

हस्स और जेरोम को खम्बे से बांध कर जला दिये जाने के बाद जर्मनी में मार्टिन लूथर ने केवल अनुग्रह द्वारा उद्धार के विषय बाइबिल सत्य को खोज लिया।

112

कुछ लोगों ने प्रश्न किया, "ऐसा क्यों है कि लूथर ने उन सभी बाइबल सच्चाइयों को पुनः नहीं खोजा जो अन्धकार युग में खो गयीं थीं?" और बाइबिल कहती है,

२२ - इतने सारे चुनाव

113

(मूलपाठः यूहन्ना १६:१२)

"मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।"

यूहन्ना १६:१२

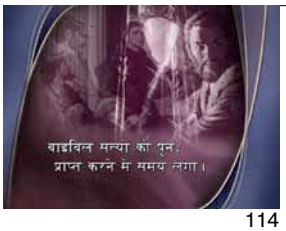

114

बाइबिल के सत्यों को पुनः प्राप्त करने में समय लगा। यह एक प्रक्रिया थी।

अंधकार युग में यीशु के विश्वास को खोने में हमें सैकड़ों वर्ष का समय लगा।

और इन सच्चाईयों को पुनः खोजने में भी वर्षों लगने थे।

115

लूथर की मृत्यु के बाद उसके विश्वासियों ने उसकी शिक्षाओं को लेकर लूथरन चर्च का गठन किया। उनके लिए धर्म सुधार का कार्य लूथर की मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया।

116

जर्मनी से हम जनेवा और स्विटजरलैण्ड की यात्रा करते हैं और जॉन केल्विन नाम के एक बाइबिल विद्यार्थी को पाते हैं जिसने अपने अध्ययन में

२२ - इतने सारे चुनाव

117

पाया कि मसीहियों को न केवल अनुग्रह और क्षमा प्राप्त करना और अनुग्रह के सिंहासन के सामने साहस से जाना चाहिए किन्तु उनके लिए मसीह में बढ़ना भी महत्वपूर्ण है।

118

इसलिए केल्विन ने वृद्धि का सिद्धान्त सिखाया, जिसे कुछ लोग पवित्रीकरण कहते हैं।
जब हम यीशु को स्वीकार करते हैं वह हमें पाप पर जय पाने की शक्ति देता है।

119

जॉन केल्विन की मृत्यु के बाद उसके शिष्यों ने उसकी शिक्षाओं को लेकर प्रेसबीटेरियन चर्च का गठन किया।
इस प्रकार आप देखते हैं कि सत्य जो एक बार अन्धकार युग में खो गया था उसे स्थिरता से पुनः खोजा जा रहा था।

120

कैलविन के समय के बाद उत्तरी यूरोप के अनेक भागों में मसीहियों का एक समूह था जिन्होंने बाइबिल का अध्ययन किया, और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बच्चों पर छीटें देकर बपत्सिमा देने के बजाय

२२ - इतने सारे चुनाव

121

यीशु के नमूने पर व्यक्ति के निर्णय पर और डुबकी द्वारा दिया जाना चाहिए। वे लोग एनाबेपटिस्ट कहलाये।

122

डुबकी द्वारा बपतिस्मा जैसा यीशु का हुआ था बाइबिल कि एक बहुत महत्वपूर्ण सच्चाई है जो अन्धकार युग में खो गयी थी। यह पाप के लिए मर जाने और परमेश्वर के साथ जीने का प्रतीक है।

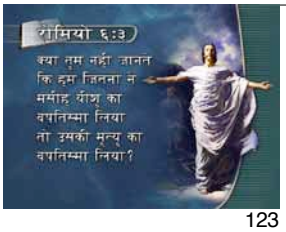

123

(मूलपाठः रोमियो ६:३,४)
"क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?

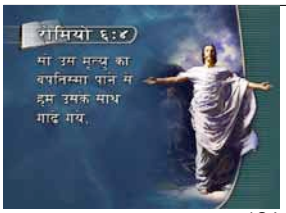

124

सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाढ़े गये,

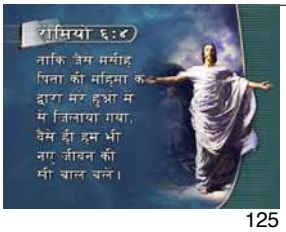

125

ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।"
रोमियो ६:३,४

126

और यीशु के समान बपतिस्मा प्राप्त करने के लिये,

२२ - इतने सारे चुनाव

127

हमें उसके विषय सीखना ही चाहिए,

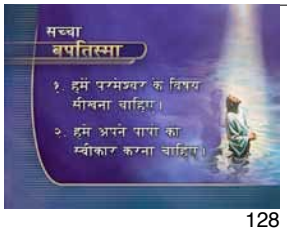

128

हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए,

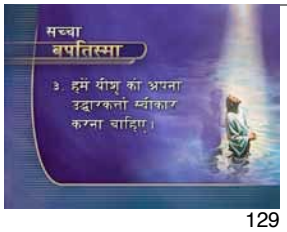

129

और यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करना चाहिए। अनेक एनाबेपटिस्टों को अपना जीवन खोना पड़ा क्योंकि उनका विश्वास था कि उन्हें यीशु के पद चिन्हों पर चलना चाहिए और उसी के समान बपतिस्मा लेना चाहिए।

130

इस प्रकार बैपटिस्ट चर्च का गठन हुआ।

131

(मुलपाठः मत्ती २८:१८, १९)
"यीशु ने उनके पास आकर कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।

132

इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ,

२२ - इतने सारे चुनाव

133

और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

मत्ती २८:१८, १९

134

यीशु ने अपनी कलीसिया को आदेश दिया कि जाएँ और शिक्षा दें और बपतिस्मा दें और चेला बनायें। धर्मसुधारक बैपटिस्ट इस आदेश को मानते और पूरा करते रहे, जैसे हम आज करते हैं!

135

आप देखते हैं कि इनमें से प्रत्येक धर्म सुधारक उन सच्चाईयों को पुनः खोज रहे थे जो अन्धकार युग में खो गयी थीं।

जैसे-जैसे उन्होंने इन सच्चाईयों को पुनः खोजा वैसे-वैसे उनके अनुयायियों ने विशेष समूह बना लिये जो बाद में मुख्य प्रोटेस्टेन्टस समुदाय जैसे लूथरन, प्रेसबीटेरियेन्स, और बैपटिस्ट आदि के नाम से जाने गए।

136

अन्त में इंग्लैण्ड में जौन वैसली नाम के एक व्यक्ति ने अपनी बाइबिल का अध्ययन आरम्भ किया।

२२ - इतने सारे चुनाव

137

उसके भाई चार्ल्स ने यीशु के विषय सुन्दर गीत लिखे और उन्होंने इन्हें चर्च में गाना उचित समझा। उन्होंने यह भी पाया कि केवल उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करना, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहना, और बपतिस्मा लेना और अनुग्रह में बढ़ना ही काफी नहीं था परन्तु परमेश्वर के वचन के आधार पर पवित्र बनना भी महत्वपूर्ण था। जॉन वैसली एक महान सुधारक था और जब उसकी मृत्यु हुई तो उसके अनुयायियों ने उसकी और दूसरे सुधारकों की शिक्षाओं को लेकर मैथोडिस्ट चर्च का गठन किया।

138

फिर संसार के विभिन्न भागों में, जैसे दक्षिण अमरीका, उत्तरी अमरीका, और युरोप में लोग यीशु के दूसरे आगमन के विषय में अध्ययन करने लगे।

139

उत्तरी अमरीका के विलियम मिलर नामक व्यक्ति ने यूहन्ना १४ अध्याय के यीशु की प्रतिज्ञाओं का अध्ययन किया। उसने दानिय्येल की भविष्यवाणियों को समझ कर यह जाना कि यीशु का आना बहुत निकट था।

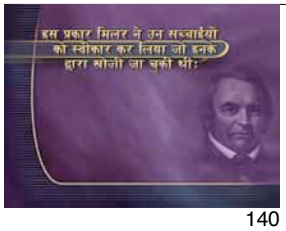

140

यह समझते हुए कि

२२ - इतने सारे चुनाव

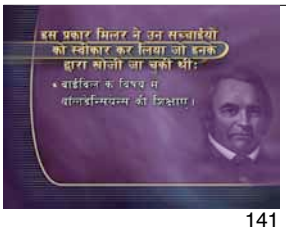

141

वॉलडेन्सियेन्स ने बाईबिल के विषय में क्या सिखाया और

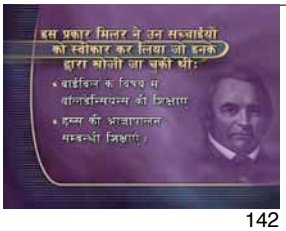

142

हस्स ने आज्ञापालन के विषय जो सिखाया,

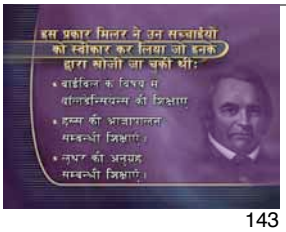

143

लूथर ने अनुग्रह के विषय जो सिखाया,

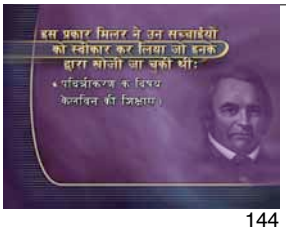

144

कैलविन ने पवित्रीकरण या वृद्धि के विषय जो सिखाया,

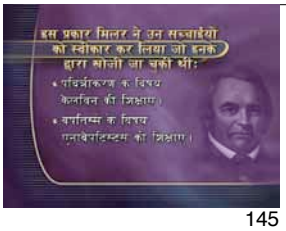

145

एनाबेपटिस्टस ने बपतिस्मे के विषय जो सिखाया,

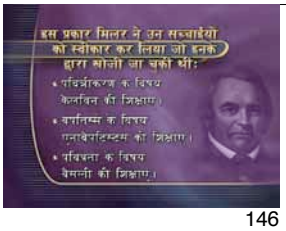

146

और वैसली ने जो पवित्रता के विषय सिखाया, मिलर ने इन सब में एक बहुत महत्वपूर्ण सिद्धान्त जोड दिया: मसीह के दूसरे आगमन की निकटता।

२२ - इतने सारे चुनाव

147

मिलर के बाद आगमन आन्दोलन चलता रहा। उसके मित्रों ने यह भी पाया कि जब लोग मरते हैं तो पुनरुत्थान की प्रतीक्षा में वे यीशु में सो जाते हैं। जैसा कि बाइबिल बहुत स्पष्टता से सिखाती है, हम पुनरुत्थान के उस क्षण तक सोते हैं जब तक हमें कब्र से बाहर आने के लिए पुकारा नहीं जाता। क्या ही महिमामय सुबह होगी जब बिछड़े हुए प्रियजन फिर मिलेंगे।

148

आरम्भ के एडवेंटिस्टों ने बाइबिल में पाया:

149

१. मृत्यु एक नींद है।

150

२. यीशु शीघ्र आ रहे हैं।

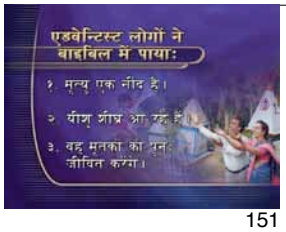

151

३. वह पुनरुत्थान पर मृतकों को पुनः जीवित करेंगे:

२२ - इतने सारे चुनाव

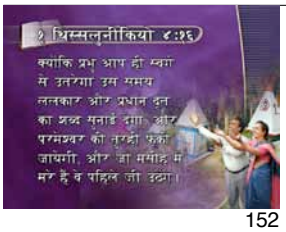

152

(मूलपाठः १ थिस्सलुनीकियो ४:१६)

"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जायेगी, और जो मसीह में मरे हैं वे पहिले जी उठेंगे।"

१ थिस्सलुनीकियो ४:१६

153

(मूलपाठः यूहन्ना १४:१५)

विलियम मिलर के समय के बाद मसीह के दूसरे आगमन के विश्वासियों ने यूहन्ना १४:१५ में यीशु के शब्दों को भी पाया: "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

आप देखते हैं हम सभी को यीशु के साथ प्रेम पूर्ण सम्बन्ध रखने की चाहत होनी चाहिए। क्योंकि हम उससे प्रेम करते हैं हम उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करना चाहेंगे।

उनमें से केवल कुछ नहीं, किन्तु प्रत्येक आज्ञा।

२२ - इतने सारे चुनाव

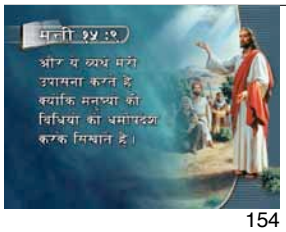

154

(मूलपाठः मत्ती १५:९)

ध्यान दें यीशु ने मत्ती १५:९ में क्या कहा: "और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते है।"

आज यह कितना सत्य है।

लोग मनुष्यों की आज्ञाएं और सिद्धान्त सिखाते हैं।

155

किन्तु इसका कोई सार नहीं कि मनुष्य क्या कहता है। सार इसमें है कि परमेश्वर क्या कहता है।

156

जब उपासना की बात आती है तो हमें परमेश्वर की उपासना सब्त के दिन करनी चाहिए जो उसने हमारे लिए अलग किया है।

यह एक विशेष दिन है जो उसने हमें दिया है। इन सच्चाईयों का अध्ययन करने वाले लोगों ने मिलकर सेवेन्थ - डे एडवेन्टिस्ट चर्च का गठन किया।

यशायाह ५८:१३,१४ में यह पूर्व घोषणा हुई थी कि एक आन्दोलन परमेश्वर की व्याख्या में आई दरार की मरम्मत करने के लिए होगा। यह संदर्भ उसी विशेष दिन के विषय बात करता है:

२२ - इतने सारे चुनाव

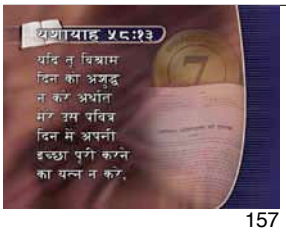

157

(मूलपाठः यशायाह ५८:१३, १४)

"यदि तू विश्राम दिन को अशुद्ध न करे अर्थात मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे,

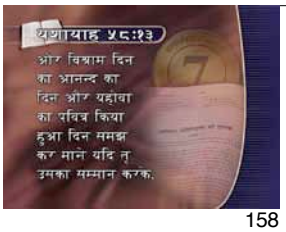

158

और विश्राम दिन को आनन्द का दिन और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन समझ कर माने यदि तू उसका सम्मान करके,

159

अपनी इच्छा पूरी न करे और अपनी ही बाते न बोले,

160

तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा;

161

और मैं तुझे देश के ऊँचे स्थानो पर चलने दूँगा,

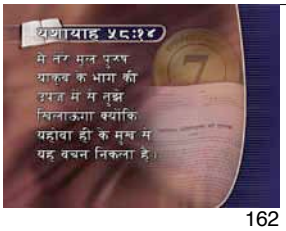

162

मै तेरे मूल पुरुष याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाऊंगा क्योंकि यहोवा ही के मुख से यह वचन निकला है।"

२२ - इतने सारे चुनाव

163

प्रभु स्पष्ट रूप से बताता है कि हमे उस दिन काम नहीं करना चाहिए।

हमें उस दिन व्यवसाय नहीं करना चाहिए।

हमें उस दिन अपनी ही प्रसन्नता नहीं खोजनी चाहिए।

164

यह एक पवित्र दिन है। जब हम सब्त में परमेश्वर को प्रथम स्थान देंगे तो हमारा अनुभव प्रसन्नता भरा होगा। सब्त उल्लास का दिन है। परमेश्वर हमसे कुछ ले नहीं रहा है; वह हमें एक विशेष आशीष दे रहा है। वह कहता है कि वह हमें पृथ्वी के ऊँचे स्थानों पर चलायेगा। कितनी आशीषें वह हमें देगा अगर हम उसे अपने जीवन में पहला और सर्वोतम स्थान दें, उसका अनुशरण करें, और उसके पवित्र सब्त को मानें।

165

प्रत्येक सच्चाई की, जो परमेश्वर ने हमें बाईबिल में बताई है, शैतान ने एक झूठी नकल बनाई है।

166

परमेश्वर कहता है कि जब हम मरते हैं तब हम कब्र में सो जाते हैं। शैतान झूठ कहता है कि मरने पर हम स्वर्ग या नरक या पाप मोचन स्थान को जाते हैं।

२२ - इतने सारे चुनाव

167

परमेश्वर कहता है कि बपतिस्मा डुबकी द्वारा है।
शैतान कहता है यह छींटे द्वारा हो सकता है। परमेश्वर ने हमें स्वास्थ्य के नियम दिए हैं।
शैतान कहता है कि स्वास्थ्य के नियम मिटा दिये गये।
प्रत्येक सच्चाई के लिए एक झूठ है। यह भ्रम पैदा करता है।

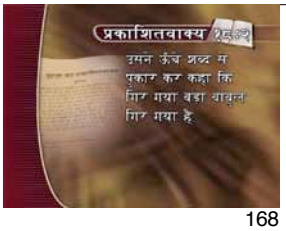

168

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १८:२)
प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इसके विषय बोलती है :
"उसने ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा है,

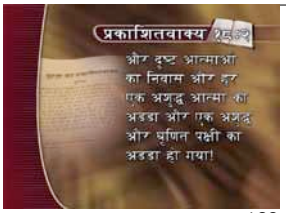

169

दुष्ट आत्माओं का निवास और हर एक अशुद्ध आत्मा का अडडा और एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अडडा हो गया!"
प्रकाशितवाक्य १८:२
भविष्यवाणी में बाबुल का अर्थ एक धार्मिक गड़बड़ी से है।"
और यहां प्रार्थना पर ध्यान दीजिए।

170

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १८:४)
"फिर मैने स्वर्ग में से किसी और का शब्द सुना कि हे मेरे लोगों उस में से निकल आओ,

२२ - इतने सारे चुनाव

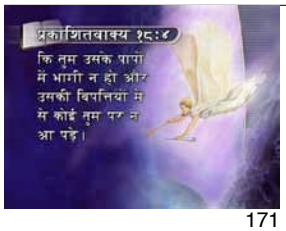

171

कि तुम उसके पापों में भागी न हो और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर न आ पड़े।"
प्रकाशितवाक्य १८:४

172

परमेश्वर अपने लोगों को गड़बड़ी में से बाहर आने के लिए बुला रहा है कि वे उसके पापों के भागी न हों।
मित्रों, यीशु आपको अभी बुला रहे हैं।
यीशु के लिये निर्णय करने का यही समय है!

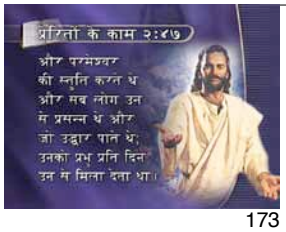

173

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २:४७)
परमेश्वर के वचन पर ध्यान दीजिएः "और परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उन से प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे; उन को प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था।"
प्रेरितों के काम २:४७

174

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १२:१३)
"क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास क्या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया

175

और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।"
१ कुरिन्थियों १२:१३

२२ - इतने सारे चुनाव

176

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १:१८)

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है,

177

परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।"

१ कुरिन्थियों १:१८

२२ - इतने सारे चुनाव

178

जैसा कि हमने आज रात सीखा है यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि यीशु ने अपने जीवन और शिक्षाओं द्वारा उस सच्चाई को प्रकट किया जिसे वह चाहता था कि उसके अनुयायी जानें और पालन करें। हमने यह देखा है कि शैतान किस तरह सत्य और मसीह की कलीसिया के साथ युद्ध करता रहा है। मसीह ने अपनी कलीसिया को जो सच्चाई दी है उसे शैतान सताता, भ्रष्ट करता, और उसका झूठा रुप प्रस्तुत करता आया है। हमने अपनी बाइबिल के अध्ययन और इतिहास से देख लिया है कि मसीह अपने लोगों का उस सत्य की ओर अगुवाई कर रहा है जिसे उसने अपनी कलीसिया को दिया था। वह धार्मिक गड़बड़ी में से अपने लोगों को उस सच्चाई में बुला रहा है जो उसके पवित्र कार्य द्वारा प्रकट हुई है। क्या आप अभी दूतों की पुकार का उतर देना चाहेंगे, "हे मेरे लोगों, उस में से निकल आओ।" क्या आप इसी वक्त परमेश्वर की उस कलीसिया का एक भाग नहीं बनना चाहेंगे "जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते और यीशु पर विश्वास रखते हैं"?

जो ठीक है उसे करने के लिये हमें बाबुल में से बाहर बुलाया गया है। क्या आप अपने यीशु को प्यार नहीं

२२ - इतने सारे चुनाव

करते? वे शीघ्र आ रहे हैं हमको उन स्वर्गीय घरों में ले जाने के लिये जो वे हमारे लिए तैयार कर रहे हैं। क्या आप सारे रास्ते भर उसके पीछे चलना नहीं चाहते?

२२ - इतने सारे चुनाव